Tender Heart High School Sector - 33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 2 'बहू की विदा' (एकांकी) लेखक - विनोद रस्तोगी

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-
"ठीक ही कहा आपने। आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है। जिसके पास पैसा नहीं वह नाक मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछ कटा है।"

प्रश्न (क) वक्ता और श्रोता कौन है ? वह किस बात पर व्यंग्य कर रहा है?
उत्तर - वक्ता प्रमोद है और वह जीवनलाल का यह कथन सुनता है कि ज़रा यह भी देख लें कि नाक वाले अपनी बेटी का स्वागत कैसे करते हैं. इस पर राजेश्वरी अपने पति से कहती है कि दुनिया में एक तुम्हीं नाक वाले हो और सब नकटे हैं। तब जीवनलाल प्रमोद से पूछता है कि प्रमोद तुम्हीं बताओ, मैंने कोई बुरी बात कही है ? तब प्रमोद धीरे से कहता है कि आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है। वक्ता (प्रमोद) व्यंग्य करता है कि जिसके पास पैसा है, उसी का समाज में सम्मान है और उच्च वर्गीय प्रतिष्ठा है। इस तरह वह जीवनलाल पर व्यंग्य करता है।

प्रश्न (ख) उपर्युक्त पंक्तियों में आज के युग में किस बुराई की ओर संकेत किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - उपर्युक्त पंक्तियों में आज के युग की इस बुराई की ओर संकेत किया गया है कि आज के युग में जिसके पास पैसा नहीं है, उसकी समाज में कोई इज़्ज़त नहीं होती। पैसे वाले को ही समाज में प्रतिष्ठा प्रदान की जाती है। बिना पैसे वाले को छोटी नज़र से देखा जाता है।

प्रश्न (ग) क्या आप वक्ता की बात से सहमत हैं ? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर - उक्त कथन प्रमोद का है कि आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है। जिसके पास पैसा नहीं, वह नाक मूँछ होते हुए भी नकटा है और मूँछ कटा है, से हम पूर्णतया सहमत हैं। आज के युग की सच्चाई यही है। लोग पैसे वाले को बड़ा आदमी और बिना पैसे वाले को छोटा समझते हैं। नाक और मूँछ समाज में शान और प्रतिष्ठा का प्रतीक मानी जाती है और इसीलिए धन वालों को नाक और मूँछ वाला कहा जाता है। सामाजिक समानता के लिए यह उचित नहीं है। मनुष्य बड़ा होता है अपने अच्छे कर्मों से, अपने अच्छे व्यवहार से इसलिए प्रतिष्ठा पैसे के आधार पर न होकर सदाचार के आधार पर होनी चाहिए और ऐसे व्यक्ति को ही समाज में बड़ा माना जाना चाहिए।

प्रश्न (घ) 'बहू की विदा' एकांकी द्वारा एकांकीकार ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर - उत्तर के लिए छात्र स्वयं पढ़ें — एकांकी संचय अभ्यास पुस्तिका पृष्ठ संख्या 18 'एकांकी का संदेश'।

(ii) (बिगड़कर) "हमने तो जीवनभर की कमाई दे दी और उनकी नज़र में दहेज पूरा नहीं दिया गया। लोभी कहीं के!"

प्रश्न (क) उपर्युक्त वाक्य का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - उपर्युक्त कथन जीवनलाल ने कहा है। जब गौरी को लेने गया रमेश अकेला ही लौट आता है तब जीवनलाल के पूछने पर वह कहता है कि गौरी के ससुराल वाले दहेज पूरा न मिलने से नाखुश हैं इसलिए उन्होंने गौरी को विदा नहीं किया। जीवनलाल यह सुनकर क्रोधित हो जाता है और लड़के वालों (गौरी के ससुराल वालों को भला-बुरा कहने लगता है। उन्हें दहेज के लोभी कहता है।

प्रश्न (ख) किसने जीवनभर की कमाई किसे दे दी और क्यों?

उत्तर - जीवनलाल के उपर्युक्त कथन के द्वारा हमें ज्ञात होता है कि उसने अपनी बेटी गौरी की शादी में बहुत दान-दहेज दिया, उसने अपने जीवन भर की कमाई बेटी की शादी में दहेज के रूप में उसके ससुराल वालों को दे दी फिर भी वे शिकायत कर रहे हैं कि गौरी की शादी में जीवनलाल ने पूरा दहेज नहीं दिया।

प्रश्न (ग) दहेज के दुष्प्रभाव पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत एकांकी में समाज में प्रचलित दहेज-प्रथा के अभिशाप पर

तीखा प्रहार किया गया है। इस दहेज-प्रथा का दुष्प्रभाव सबसे अधिक वर्तमान मध्यमवर्गीय परिवारों पर पड़ता है। बेटी के जन्म के साथ ही माता-पिता उसके सुखी भविष्य के लिए धन एकत्रित करना आरंभ कर देते हैं क्योंकि वे अपनी पुत्री को किसी भी प्रकार से दुःखी नहीं देखना चाहते हैं। जहाँ माता-पिता दहेज नहीं जुटा पाते वहाँ बेटियाँ प्रताड़ित की जाती हैं और यातनाएँ सहती हैं। यदि बेटे और बेटी वाले दोनों ही पक्ष एक-दूसरे की पीड़ा को समझें तो समाज से इस कलंक (दहेज को) को सदा के लिए मिटाया जा सकता है।

प्रश्न (घ) 'लोभी' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है? उसका परिचय दीजिए।

उत्तर- 'लोभी' शब्द का प्रयोग गौरी के ससुराल वालों के लिए किया गया है। वे गौरी की विदा इसलिए नहीं करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि गौरी के विवाह में जीवनलाल ने दहेज पूरा नहीं दिया गया है। इसलिए जीवनलाल उन्हें 'लोभी' कह रहा है।

"बहू और बेटी! बेटी और बहू! अजीब उलझन है। कुछ समझ में नहीं आता।"

प्रश्न (क) वक्ता और श्रोता कौन हैं? कथन का संदर्भ स्पष्ट करो।

उत्तर- प्रस्तुत कथन का वक्ता जीवनलाल है और श्रोता उसकी पत्नी राजेश्वरी है।

प्रमोद अपनी बहन कमला को सावन के महीने में विदा कराने के लिए आया है। मगर जीवनलाल विवाह में पूरा दहेज न मिलने के कारण विदा करने से मना कर देता है। प्रमोद उसे मनाने की कोशिश करता है परन्तु वह प्रमोद को बहुत बातें सुनाता है कि तुमने दहेज देना तो दूर, बारात की खातिरदारी भी ठीक से नहीं की। भरी बिरादरी में मेरी हँसी हुई और उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। अतः उस चोट के मरहम के रूप में पहले पाँच हज़ार रुपए मेरे हाथ पर रखो उसके बाद ही तुम्हारी बहन की विदा होगी।

लेकिन जब उसकी बेटी को भी उसके ससुराल वाले दहेज पूरा न मिलने की शिकायत करके रमेश के साथ नहीं भेजते हैं तब वह जैसे आसमान से ज़मीन पर आ गिरता है। तब

राजेश्वरी उसे समझाती है कि बेटी और बहू में भेद करना छोड़ दो। किसी की बेटी हमारी बहू है तो हमारी बेटी भी किसी की बहू है। तब जीवनलाल के सामने उलझन खड़ी हो जाती है कि अभी तक तो वह इन दोनों में भेदभाव करता रहा है।

प्रश्न (ख) वक्ता के सामने क्या उलझन है? इस उलझन का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर- वक्ता के सामने सबसे बड़ी उलझन यह थी कि वह बेटी और बहू को समान नहीं समझता है। उसकी इस उलझन को दूर करने के लिए राजेश्वरी समझाती है कि अगर हर बेटीवाला यह याद रखे कि वह बेटीवाला भी है तो सब उलझनें सुलझ जाएँगी। पत्नी की यह नसीहत पाकर उसकी आँखें खुल जाती हैं और वह कमला को विदा करने के लिए स्वीकृति दे देता है। वह बहुत लज्जित होता है और प्रमोद से कहता है कि मेरी चोट का इलाज बेटी के ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है

प्रश्न (ग) बेटी और बहू कौन है? आजकल बेटी और बहू में क्यों और किस प्रकार अंतर किया जाता है?

उत्तर- यहाँ पर 'बेटी' जीवनलाल की अपनी पुत्री सौरी है और 'बहू' जीवनलाल के पुत्र रमेश की पत्नी कमला है। जो प्रमोद की बहन है।

आजकल लोग बेटी अर्थात् अपनी पुत्री को अधिक स्नेह करते हैं। उसके सुख-दुख का हर पल ध्यान रखते हैं। लेकिन बहू को पराई लड़की समझते हैं। उसके सुख-दुख की उन्हें बिल्कुल परवाह नहीं होती। यदि बहू दहेज नहीं लाती तो उस पर अत्याचार किया जाता है, अनेक मानसिक तथा शारीरिक यातनाएँ देते हैं।

प्रश्न (घ) दहेज प्रथा को रोकने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर- दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है। यह ऐसी कुप्रथा है जिसकी बलि-वेदी पर वे कन्याएँ चढ़ती हैं जो अपने घरों से लड़के वालों की आशा के अनुरूप पर्याप्त दहेज नहीं ले जाती हैं। इस प्रथा को रोकने के लिए सबसे पहला कदम यह होना चाहिए कि बहू और बेटी को एक समान समझना चाहिए।

इस बुराई को दूर करने के लिए जागरूकता की आवश्यकता है। जो लोग लेते या देते हैं, उन्हें दण्डित किया जाना चाहिए।

सबसे महत्त्वपूर्ण सुझाव यह होगा कि 'दहेज प्रथा' जैसी बुराई को समाप्त करने के लिए युवाओं को आगे आना होगा और दहेज रहित विवाह को बढ़ावा देना होगा। उन्हें दहेज न लेने और न देने का दृढ़ निश्चय करना होगा।